

ASHA ARCHIVES

श्री १०८

1.353

ASHA ARCHIVES

श्री शान्ति

२४७

श्री यमना पूजाय च वा ला वा प ॥ ॥

[illegible][illegible]

॥ बुं को नृद

[illegible]

आसिद्धि लक्ष्मीधरनाथ दि॥ श्रीगौरी

[illegible]

वकु ॥ नमानिस्थादिमानन्दनन्दिनायै डरुववकु ॥ सकलकलचकनायिक
 येयश्चिमवकु ॥ रुगवसेचधुकायालिने डरुवकु ॥ गंरुमश्च ॥ द्यं ददि ॥
 थां नास्ति ॥ ॐ निदरुनास ॥ ॥ ॐ मूरु ॥ द्वां वामनायायूट ॥ दूंदरुना
 मायूट ॥ द्वां वामनरु ॥ रूंदरुनरु ॥ क्वां वामक ॥ क्वां दरुक ॥ नंलिग
 ॥ म४ गुद ॥ र्धुं नम४ सर्वसिद्धियागिनीया डरुवकु नाथधी ॥ र्धुं सर्वसिद्धि
 माहकस्यायूटवकु नाथधी ॥ र्धुं नमादिस्थाविमानन्दानन्दिनायै दक्षिणव
 कु नाथधी ॥ र्धुं सकलकलचकनायिकायै डरुववकु नाथधी ॥ र्धुं रुगव

येचधुकायालिनेयश्चिमवकु नाथधी ॥ नम४ सर्वसिद्धियागिनीयायै यव
 वकु नाथधी ॥ ॥ र्धुं यवमरुसिनी द्वादयायनम४ ॥ निर्वानमार्गदवीगि
 यस्वाह ॥ विषभाप्रवषमनी गिस्वायेवोषट् ॥ सकलदूलिनालिस्कुक्क
 दलनिकवचायदू ॥ सर्वायटारुधिनावनी नरुगयायवषट् ॥ र्धुं सकल
 धरुयमर्थनिअरुयरुट् ॥ ॐ द्वां दूंदरुं द्वां दूंदरुं क्वां क्वां नम४ ॥ ॐ निदिधामर्वा
 गयायक ॥ ॐ निन्यासविधि ॥ ॥ धनाथवरवत्तवाकथकवायावर्मच
 न ॥ र्ववद्रिमधुलायदधकलात्मने ॥ रूट् ३ धरिक्कयस्वाह ॥ मंचिसर्ग ॥

पूजन ॥ हं सूर्यमधुलाय द्वादशकलात्मने ॥ लख गय ॥ नंदं धीं नंदीं
 गंगे वज्रमूर्ते वरुणादि ॥ उलना पूज ॥ कनाना ॥ नंदं धीं संधाममधु
 लाय द्वादशकलात्मने ॥ मत्स्यमूडानेना कथायाव ॥ ३ श्री वरुणा देवी
 श्री ॥ मूलनवाक्षुषे नय पूज ॥ धनमूदयिदध्य ॥ गऊं लन पूजों कनना
 दिस्तुनादिक स्वात्मानं विचय ॥ गय गामगुदा ॥ खुं सिद्धिलक्ष्मी विद्महे न
 वयाधिक धीमही नत्वा लक्ष्मीयेवा दयाम् ॥ धवनिवस कर्गन ॥ नंदं धीं गु
 वरुणानमः ॥ ३ यवमाचार्य गुवरा २ ॥ ३ पूर्व सिद्धि गुवरा २ ॥ ३ आदि सिद्धि
 य ४

गुवरा २ ॥ ॥ **कनयाय पूजा** ॥ सामान्यार्घ्यस्योदकलन चिकाण सत्काण
 वाकय कवाय ॥ धक र्गन ॥ नंदं धीं संधामलायनमः ॥ नंदं कामवृययी भय २ ॥
 क्री पूज निवियी भय २ ॥ सो १ जाल धलयी भय २ ॥ नंदं धीं डाद्यानयी भय २ ॥ खुं
 धीं अस्त्राय रुद्र ॥ मतिश्च वावर्ग ॥ धक र्गन ॥ नंदं धीं वां वीं वूं न्मां धर्मयदद
 दकलात्मने अग्निमधुलाय धी सिद्धिलक्ष्मी अर्घ्यायास्त्राय २ ॥ ३ याणयल
 अस्त्राय रुद्र ॥ सिद्धं न चिकाण वायाव ॥ खुं धीं धीं सिद्धिलक्ष्मी अर्घ्याया
 स्त्रायामि ॥ धक र्गन ॥ ३ हं हं हं हं वमूयद द्वादशकलात्मने सूर्यमधु
 ३२
 ३ हं

कं ३
 दूकी ॥ ॥ गंगादावपूजा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आक्षरं नमः ॥ ३ ॐ अनन्तार्य
 २ ॥ ३ धं धरणी २ ॥ ३ वं वसुधाय २ ॥ ३ मं मणिर्वदिकार्य २ ॥ ३ ॐ अमृत
 समुदाय २ ॥ ३ कल्याणाय नमः ॥ ३ ॐ अयादिन्नी धनानां ॥ ३ धर्माय २ ॥ ३
 ज्ञानाय २ ॥ ३ वे वाङ्माय २ ॥ ३ नं धर्याय २ ॥ पूर्वदिषु ॥ ३ धर्माय २ ॥ ३
 अज्ञानाय २ ॥ ३ अवे वाङ्माय २ ॥ ३ अने धर्याय २ ॥ मध्या ॥ उपययवि ॥ ३
 संसृष्टगुणाय २ ॥ ३ वं वक्रगुणाय २ ॥ ३ नं नमगुणाय २ ॥ ३ सं संवित्तालाय २
 ॥ ३ धं धर्माकन्दाय २ ॥ ३ नं नलात्मकपद्माय २ ॥ ३ यं यरुक्तिपर्यया २ ॥ ३ विका

प्रमयकधर्या २ ॥ ३ ज्ञानकर्त्तृकाय २ ॥ ३ वं अग्निमधुलाय दधकलात्मन
 २ ॥ ३ हं सूर्यमधुलाय दधकलात्मन २ ॥ ३ सं साममधुलाय दधकला
 त्मन २ ॥ गगुलिका धाय ॥ ॥ नं रं कामधूय धीभय २ ॥ ३ रं रं पूर्वनिवि
 धीभय २ ॥ ३ रं रं जालधय धीभय २ ॥ ३ नं रं रं डाधानधय २ ॥ ३ नं रं रं
 स्रष्टुदलयधाय २ ॥ ३ नं रं रं वनाधधियादूकी ॥ ३ यधनाधधियादूकी ॥ ३
 यरुताधधिया ३ ॥ ३ नं रं रं रं रं मद्रामुद्रायाय २ ॥ ॥ पृथमर्कं गृहीत्वा
 नास्यागुक्कवक्कृपिकारुत्वा ॥ हृदयं दवी ध्यात्वा ॥ मूलधाय संकाय ॥

उयादवी सहस्रमुदलसनिवस्य यवगडसिवागिनिनिविशाय ॥ गनी
 थिंगवया वामनायट वननामूलमालामकुडचवग ॥ थानिमूडयाय
 वमध्ववी सुखरूपाय विवाचयुगमिधुलनिवगथे ॥ नुंकीधीयासा
 यवायवादिवी खेचवीखस्वविधी ॥ सर्वरुगहिगमात नैकहियवमध्व
 वी ॥ महामदासनादिवी सिद्धद गतिनिर्मला ॥ सर्वरुगहिगमात नैकहि
 यवमध्ववी ॥ अस्मिन्मधुलसानिध्वक २ सुखसनीरुव २ नमः स्वाहा
 ॥ नूनिदेवी मूलोचनन्याकलामावाद्य ॥ मूलविद्यास्मवग ॥ आवाहन

सनिधान सनिवाधन समुखिकवर्ध ॥ अरुगुणने ॥ धनूयानिमूडाय
 दर्श ॥ ॥ नकाधायग ॥ नुंकीधीखुं स्वर्वांगकुहायागधूलववतुकी
 जाधयार्धविग ॥ कुमासिद्धलिगादुटेकुडववग ॥ समानोविवाकूद
 रुन्धगगांनवकु विनिरोयधननीसुन्दवी ॥ यवगुणविवादिगारुग
 वगींधीसिद्धिलग्वीरुड ॥ धायत्यवायवागकिं विध्वगसकलमगां ।
 पूर्वमायूलिगाहया चवितायात्वमास्म ॥ ॥ सान्यायवायवासान्क ॥ धू
 न्यातिगानिर्वजना ॥ महानेडामयील ग्वी ॥ वस्मिकाधायगायमा ॥ निम
 ॥ असनपूजा ॥ अक्षयगकुयादि ॥ यतासनायायादुका ॥
 धाका ॥ स्वमहा

नुंकीधीयनाययादुका ॥ धानि ॥
 धका

लानिःकलादेवी सकलामूलविग्रहा ॥ यंचवकुदगं रुद्रा शिचंचनय
नायगा ॥ १८॥ गवर्णमहादेवी महायतायविस्मिता ॥ मारु काष्ठकमथ
स्तु सिद्धिगानि नियुजिता ॥ शोभापुत्रय रुचिन साधककृपासनायगा ॥
दावितास्य ललिताना कालायुर्ध्वं कर्णे कंगु ॥ डकुया कृपाया ॥ गनत्रा
नयत्कलपर्वताम ॥ कचिद्वैश्वकविक्रया ॥ कुरुं विसृष्टवर्णयडा ॥ क
चित्कुरु विसृष्टवर्णयडा ॥ १९॥ सारुवर्णयका दूव ॥ ग
दुविरुषिता ॥ याधा कृष्णधलादेवी वनदारुययानिका ॥ सद्यहसंध

गरुड उलासकुरुकावर्ण ॥ वमिखर्वागनमृग दम्बि ॥ धूलमूर्धमं ॥
अयवकन्दवोदं उलासकुरुकानिर्ग ॥ गथानासस्मिर्गमूर्धुं सकडा
॥ २०॥ निर्गविर्ग ॥ वामिखकलसंदर्भ महावर्णेश्वरपूलिर्ग ॥ उषापयानि
गादवी डडमाथासद्वर्ण ॥ उकासानेककुरुदन विश्ववाथयवस्मिता
॥ ॥ ॥ उषारुगारुगवर्ण वृद्धस्कन्धाधि वृद्धा ॥ मधुलवायनिमायावा
सानिधिविरुवयगा ॥ उंथानिमूर्डा ॥ डीगुद्धमूर्डा ॥ धीदाविनीमूर्डा ॥ न्दीक्षा
रिणीमूर्डा ॥ क्रीकालिनीमूर्डा ॥ उर्वयेश्वरमूर्डापिदधयगा ॥ ॥ अथयाग

यमिष्टा॥ नैऋतीं श्रीं आँ कौं कां यं वं वां षं सं हं लं रूं ४ साहं रुं स ४ धामिद्धिलम्बी
 ॐ रु या पा म् आँ काँ दौं धी सिद्धिलम्बी जीव ॐ रु मि ग कोँ दौं आँ धीं दौं कुँ धीः
 सिद्धिलम्बी देवताये सत्त्वकर्मना वृद्धि विरुमहे कालयाग धामन्यक जि
 दाया भादि सर्वेन्द्रियानि ॐ हे वा ग च्छु सुखं चिरं मिष्टनु २ स्वाहा॥ ॐ निया
 पयमिष्टा॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दौं धीं रु ग व र्थे धी सिद्धिलः
 श्री जून्वाये सांगाय सयविता लाय मायूषाय ॐ दं रु ग व र्थे पाई नमः ४
 स्वाहा॥ दौं धीं रु ग व र्थे ॐ त्यादि ॐ दमर्घ रु ग व र्थे नमः ४ स्वाहा॥ दौं धीं रु

गवथे त्यादि ॐ दं अचमनीयरुगवथेनमः सर्वदा ॥ सूत्राक्षिकि विवामा
म गत्तमिल्यावनरुर्मं विद्धि सिद्धि वरं यूर्ध्वं अलिमाता ददामि दे ॥ १ रुग
वथे सांगभय ॐ त्यादि ॥ गगाचन्दनं ॥ धीखलुचक्रं मेयुके कल्यूनमगनाकि
डं ॥ निलधनेयदेवशी गृहाधमनूयने ॥ गगामिन्दुव ॥ वीध्वरी त्यादि ॥
गगामालायुध ॥ १ नानायुधसूगन्धानि मालाद्याविविधानि च । देवदेवधि
गृध्रानु मयारुक्ष निर्वदिर्गं ॥ १ रुगवथे ॐ त्यादि ॥ मूलगायत्रीदण
धर्मयुध ॥ खु सिद्धिलक्ष्मीविद्महे ॐ त्यादि ॥ १० ॥ ॥ धनोयश्चिमयामा

१ घण्टीगपूजा ॥ आवायक थानिमूडा ॥

॥ नमो भगवते ॥

शुद्धा

2

लेकखादयाय॥ प्रियवयामावक॥ गुह्यकालीयामालकयाय॥ ॥
तमामूलस्वामिनियवितानपूजा॥ आरुण्यार्थयित्वा॥ यवितानपूजयत्॥
नगाकम॥ जंघीकूलगदयकिनाथधीयादूकापूजयामि॥ शकूलगजप
तिवत्सुराम्नाधी०॥ जंघीकमवदूकनाथधी०॥ जंघीकमवदूकवत्स
राम्नाधी०॥ जंघीकडोंकावयीभयधी०॥ जंघीकवृक्षसंकगायधी०॥ जंघी
सर्वसंराविधीधी०॥ जंघीकमहाकनवीनध्वनिवाधी०॥ जंघीकसकवस
हानवलीकटकगयालायधी०॥ ॥ नगायीथामगुनूकर्म॥ जंघी
विद्वानपूजा॥ २

又

विदमथ मूलन पि पाई ३

ॐ तिदनीदिग्यान पूजा ॥ २ अथ अक्षयपुत्रपूजा ॥

[illegible]

॥ वक्राक्षपूजा ॥
(ताकिन्यादि)

ॐ शिवाय नमः ॥ शु. रुगवति दधौ ॥ शु. माया दधौ ॥ शु. रुडा दधौ ॥ शु. किंकिनी दधौ ॥ शु. विमला दधौ ॥ शु. कर्कशी दधौ ॥ शु. क. मृदवी दधौ ॥ शु. शीतमार्तमा दधौ ॥ शु. किंकिनी दधौ ॥ शु. काकिनी दधौ ॥ ६०. निदा दधौ ॥

कथं वा दृष्टं न ज्ञेयम् ॥ १५ ॥
यथा वा दृष्टं न ज्ञेयम् ॥ १६ ॥

ASHA ARCHIVES

341841 7762

1.353

ASHA ARCHIVES

341841

गामदि
दिकामाऊ
यउगामीलि मादिन
दिवमाऊ

वकाधनसिद्धि लक्ष्मीया
विदु, शिवाया,
सदाया, शिदुप
दादधाय
असयण दे
अनुगय अनुदान

[illegible][illegible]

विद्या॥ नुं निरुगवती भुं सिद्धिलक्ष्मी ध्वजी जों जों दूँ दूँ रूँ रूँ महावधुया
 (गध्वजी नुं जों जों धी यत्र ॐ मरुं सिनी निरुग सिद्धि यदं जों सर्व समय लारुं
 कूव २ महाभलाय कालि विधी दूँ वा अ धी यत्र २ सूप सनी रुव रु सर्व सि
 द्धिया गिनी शानम ४॥ ॐ ति समय दान ॥ जों धी भुं कूल पूष वदू क नाथ म
 म सर्व विद्या नाथ २ सकल मना वथा न्माधय ॐ २०० मां सर्वोपचात्र ४ व
 लिं ग २ दूँ रुट् स्वाहा ॥ जों धी भुं काम गवर्ति नाथ स्वतन्त्र रुसाहि न
 स सर्व न भव न मानय २ सर्व वि ॐ ध्यानाथ २ सर्वोपचात्र ४ सहि गवलि

सु २

गृह २ दूँ रुट् स्वाहा ॥ जों धी भुं दूँ स्वस्त्य नन्दु या लाय महा रुं यव म म स
 र्व विद्या संय २ सर्वोपचात्र ॐ सहि न वलि गृह २ दूँ रुट् स्वाहा ॥ जों धी
 भुं सं सर्व शाया गिनी शान वलि गृह २ दूँ रुट् स्वाहा ॥ जों धी रुं गान नन्द रुं
 ॐ वव नूपाय सिद्धि ध्वनाय वलि गृह २ दूँ रुट् स्वाहा ॥ जों धी रुं ते स ते जों
 जों दूँ जों जों ४ महा वृडा स्नाय म म सर्व विद्या नाथ २ सकल मना वथा
 न्माधय २०० मां वलि गृह २ सिद्धि दहि दूँ रुट् स्वाहा ॥ जों धी रुं गान शा गुफ
 न वया गिनी रु ४ य कट रु व रु ४ सर्व ध्म नान वा गिनी रु ४ रु व रु ४ सर्व स

मदस्य ४ सायुध ४ सवाहना ४ सयविवाहस्य ४ नून्यतिमकस्य ४ वलिगुह
२ ममसकलमनावधानाधय २ कमस्य २ कौहं रुट् स्वाहा ॥ **ततो गय**
र्णी ॥ ॥ आवाहनादिः शान्तिमूर्धा ॥ धूप दीप ॥ जप ॥ मूलनवाक्यं
लयथा शक्तिं आयित्वा ॥ ऊँ श्रीं शुं गुह्यं तिगुह्यं यफित्वं ॥ स्वादि ॥ सामा
न्यार्थस्य जलं जपसमर्थं ॥ ततो य ॥ वादनी ॥ सुखं कावयन् ॥ ॐ नम
४ चतुकाया लिनो ॥ श्रीं संवत् ॥ शिदवया ॥ ॐ नम ४ श्रीं दयो ॥ ॐ शुं नमो
नमो हामाय देहातीतं निर्वर्तनं । यत्प्रापि वा जगन्मयी वा जलम् श्रीं नमो मुनि
का ॥

॥ शान्तिनी सिद्धि दूयाच कनू मय नू यिणी ॥ साभका न कनू याच माह काक्षक मधग
॥ जगत्मानं श्रीं दवी जगत्सहावर्गं कनू ॥ जगत्सिद्धि कनू दवी जगदानन्द कावि
णी ॥ ॐ ला कनू जगत्नी दवी वद्विचकस्य मदिनी ॥ घटे कोण कनू यच ॥ चतुर्द्वार सम
न्विता ॥ सिद्धि लक्ष्मी महेशानि वा जय मे व नू यिणी ॥ हिम कनू स काशीं सुद सुटि के
सन्निर्वा ॥ सर्वेश्वरानि रादवी हलत्मानं सन जसा ॥ जटा हूट निरुय का नीलं क
चिन्मयिणी ॥ हिम ययति नास्ति सदा दार्दुषा विणी ॥ स्वप्नाङ्ग शानि नाधत्वा वनाद्य
व्हावदन्ति ॥ काश गूलैर्या वधैः अरुया मधुवामक ॥ सवलिकलसंयका रुम
वर्त्तनी घलं कनू ॥ शुक्र वलुय विधाना मन्दिवानन्द वरसा ॥ नूद सन्ध समो नूरा नूद सु
टि क सन्निर्वा ॥ एका सन्धि लाचनसा स्व ॥ शुन्द कनू वषा ॥ चतुर्द्वार महेशानि ॥ द्वय
रुस कनू गात्रे लि ॥ यथा सनाय विष्णु वक्रवर्ण महोद्गला ॥ कीटिपू ॥ नूद राद

८४

वी. कल त्मानसं न जसा। नाना वृत्तयधवा दवी, नाना धर्मा सुधारिणी॥ वक्रवक्रावक्रु
जा वक्रुया दामहावला। विश्ववृत्तामहा धानि, लक्ष्मीवृत्तावगाविणी॥ चिन्तामणिनिता
दवी, चिन्तागार्थरु लपदा। नमस्वा हा वं उवाषट् कृत्वा वषट् सुगु॥ वं नमस्तु महा
दवी, मनुमातर्महेश्वरी। आश्विनरु हि गादवी, रुद्रांगकटिलाकणि॥ सय्यक धुले
नी धकिः अगम्या गमवाविणी। गने गने र्यवा लन, वक्रा धुं द्वाव रुदिनी॥ अतिम
दिमहा सिद्धिः विद्धि सिद्धि र्यदायनी। यथेशत्मा पिण्डु संयुक्ता, वाङ्मलक्ष्मी पत्रायनी॥
लक्ष्मी वृद्धयन दवी, दीयक यत्र मध्वरी। कूल वृत्तामहा धानी, नवद्यादि गनद्वय॥
सफा दहा वृत्तवम, सफ यत्र शसह कव। नृका गवमहा दवी, धूम्रवृत्तायन नमः
॥ नमस्तु महा दवी, मनुमातर्महेश्वरी। सर्वयाय विनिर्मक्ता, आयुवाधा ग्ववर्द्धि
नी॥ लक्ष्मी युक्ता रुवकुमा, यान्मदा मन् गज लुवग। सफ सा गन य च नं गीर्थत्ता

न स क ह वं न॥ सकल ल्हादह सुखा याथा धरु ण नानि वन। हला रुगदिदं क
ला वेद्रु हा विपयू किर्न॥ माह हा विरु हा वं व वक्रु हा रु ने हा गथा। लि सत्ता गा
दिक याय, सस्म लो रु क नालय॥ शि सं धाय ४ य ८० त्का यि म क विरु समादि ग भवन्ध
मामू चर्न याय, निग धुम ह्मा टिका निव॥ ना वा ८ कट र्य जालि, रुक्म र्यत्ता नयत्सदा
। वा गा व ध्रु यथा व, सिद्धि या या हि सं कट॥ विषम गुरु ८० वां क्रु, रुगाय स्मा न
ना धर्न। यं नमस्तु दिवू ८० यं न क ला विना शयन॥ कलिक ना चिद्रु ह्मा विष
ना धन सं रु वं न। कवचा रु ध गदी नि, ना शयत्स वं न निव॥ अचिन्ता निवार्थ
नि सदा ग स रु वे नि रु॥ अलक्ष्मी गमनी रुया, दू ४ रु द्वा विद ना धनी। लक्ष्मी ध्वनी
नि विरु या गा। वक्रु हा गम महा वला॥ महा लक्ष्मी महा कान्ता, सर्व सीता ग्वदायनी॥
सन्दिता नन्द च ना न्या, महा धूम्रि न ला चना॥ अनन्द सम रु गाना, विश्ववृत्ताव

नाविणी॥ वाक्को बोदी च कामात्री वैष्णवाश्च नयानकं । माहृती चर्चिका चैव च
 लुकाष्टक मध्यागा । अष्टादशी महासिद्धि सिद्धि आगिनामध्यागा ॥ यज्ञयद्वि विधाः
 कावा गन्धमादिरियुक्ता ॥ धूपयत्नैव कर्तव्यं कस्तूरिचसमाहिता ॥ आवाध
 गात्रगन्धर्व ॥ सुलोका मयि युक्तिना । गजाधर्महिषा च्छाग गावा विवद्वयन
 ॥ यथा यथ्यगिना याज्ञा यज्ञसर्वसदावर्धे ॥ वदू नष्ट किमूकन अचिन्तितानि
 सिद्धय ॥ स्मरणात् सदा देवी दुःखदा विदना गनी ॥ नमस्तु महादेवी नम
 स्तु विश्ववृत्तिना ॥ नमस्तु इत्युक्त गत्मान सिद्धिलक्ष्मी नमो इत्युक्त ॥ ॥००॥ तिथी
 सिद्धिलक्ष्मी सायं समाफ ॥ अष्टगंधादि ॥ नमस्तु ॥ ॥ यद्युक्त यथार्थ ॥
 ००॥ तिथी सिद्धिलक्ष्मी पूजा विधिसमाफ ॥ ॥ सम्वत् १८१ मार्गशीर्ष १३ ॥

रसधिरसिनिर्वाणचक्रं ध्यायन् ॥ गतानिर्वाण पूजनी ॥ नैंदो धीं कुं कौं वंद
 णववानन्दनाथ सरुजाय नमो ॥ कौं कुं धीं कुं नैयादू का पूजयामि ॥ नैंदो धीं
 महागणपतिनाथ सरुजाय नमो ॥ कौं कुं ॥ नैंदो अरुं श महाविद्यामहामनुया
 दू का ॥ नैंदो धीं ॥ धुं कुं निष्कलयाद ॥ कौं ॥ धुं कुं निष्कलयादू का ॥ नैंदो धीं ॥
 कुं निष्कलयादू का ॥ कौं ॥ धुं कुं निष्कलयादू का ॥ नैंदो धीं ॥ नैंदो धीं ॥ नैंदो धीं ॥
 नानन्दनाथ महानिर्वाण ध्यायन् नमो ॥ कौं कुं ॥ धुं कुं निष्कलयादू का ॥ नैंदो धीं ॥
 दू का ॥ ॥ नैंदो धीं ॥ कौं कुं ॥ नैंदो धीं ॥ कौं कुं ॥ नैंदो धीं ॥ कौं कुं ॥ नैंदो धीं ॥
 काणा नन्दनाथयादू का ॥ ॥ नैंदो धीं ॥ कौं कुं ॥ नैंदो धीं ॥ कौं कुं ॥ नैंदो धीं ॥ कौं कुं ॥

हं हं हं हं हं हं ॥ अनिरंजन कमला म्नाय नमः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं क्लीं क्लीं
नमः ॥ सिद्धि लक्ष्मी ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं क्लीं ह्रीं क्लीं नमः ॥ गुह्य कालिया निर्वोद ॥
नं ह्रीं क्लीं नं ह्रीं क्लीं नं ह्रीं क्लीं नं ह्रीं क्लीं नं ह्रीं क्लीं नं ह्रीं क्लीं नं ह्रीं क्लीं
धीयादूकी ॥ निर्व ॥ अनिरंजन कमला म्नाय नमः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं क्लीं ह्रीं क्लीं
॥ निलीन निनांका ॥ वा द्विजुजा कलनायिका ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं क्लीं ह्रीं क्लीं
वी गिनं गचन्द्र ॥ यरा ॥ सुष्मा नूपा मरुणा नि क ॥ ध्यामि नता धू
ना ॥ वक्ष्ये यद्वासन ॥ थागी स्तिव कायस्व विवत ॥ कलाया रुणा न्या
संच स्मत्वा धीगुन ॥ यादूकी ॥ अकच ककुली हाकि ॥ अगि सुष्मा स्व नू

[illegible]

(ॐ) शिवानन्दनाथम् ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 यादूकी ॥ महीक ॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ॐ शिवाय नमः ॥
 सककाटिमहामन्त्र ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 वानन्दनाथयादूकी ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 वानन्दनाथाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 काव ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 वायधीमही ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 वायधीमही ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

न्दायधीमही ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 वीर्य ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 वियूनेगर्ग ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 वीर्य ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 यूपारुपयैकाई ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

शिवदिल्लीचक्र॥

